मोरंगे

दिसम्बर 2013

इस बार

खिड़की

3 बसु का प्रयोग

कविताएँ

4 मन

5 पहाड़ से

6 तितली
तितली रानी

कहानियाँ

7 माँ का घर

8 जान बचाओ

9 पसंद की रोटी

11 शेरनी के चार बच्चे

12 गोपाल किसान

याद की धूप–छाँव में

13 हर दिन चटन

बात लै चीत लै

15 अपना–अपना भाग

17 मटरगश्ती बड़ी सस्ती

19 कुछ हमने बढ़ायी
कुछ तुम बढ़ाओ

कल्पना
उम्र–6 वर्ष
समूह–सितारे

सहयोग : **विष्णु, भारती, अशोक, दिनेश, तरूण**

प्रूफ : **वेणी प्रसाद शर्मा**
वितरण : **लोकेश राठौर**
डिज़ाइन : **अश्विनी कुमार पंकज**

प्रबंधन
मनीष पांडेय
सचिव, **ग्रामीण शिक्षा केन्द्र**

आवरण पर चित्र :
गोलू, बोदल, 9 वर्ष

दिसम्बर 2013, वर्ष 5, अंक 54

यात्रा foundation AUSTRALIA

मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया एवं 'हैसली फैमिली फाउण्डेशन' के सहयोग से हो रहा है।

पत्रिका का पता

मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
हॉटल सिटी हार्ट के सामने,
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
राजस्थान 322001

फोन : 07462–220957
फैक्स : 07462–220460

दीपेन्द्र, तारे, उम्र–10 वर्ष

बसु का प्रयोग

यह घटना उस समय की है जब भारत के महान वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु इंग्लैंड में थे। उन दिनों वह इस बात की खोज में लगे हुए थे कि पौधों में भी जीवन है और वे भी हमारी तरह पीड़ा का अनुभव करते हैं। वह इसे सिद्ध करने के लिए दिन–रात प्रयोग में जुटे हुए थे। आखिर वह दिन भी आ गया जब उन्हे लोगों के सामने इस बात को सिद्ध करना था। उस दिन उनका प्रयोग देखने के लिए दुनिया भर के वैज्ञानिक एवं लोग एकत्रित थे। बसु ने एक नजर भीड़ पर डाली जो बेसब्री से उनके प्रयोग की प्रतीक्षा कर रही थी और दूसरी नजर उस पौधे पर जिसके माध्यम से वह प्रयोग करने वाले थे।

उन्होने इंजेक्शन द्वारा उस पौधे को जहर दिया। बसु के प्रयोग के अनुसार जहरी इंजेक्शन से पौधे को मुरझाना चाहिए था, लेकिन कुछ समय बाद भी जब पौधा नहीं मुरझाया तो वहाँ उपस्थित लोग उनका मजाक उड़ाने लगे। बसु के लिए यह अत्यंत कठिन घड़ी थी। वह अपने प्रयोग के प्रति पूरी तरह आश्वस्त थे। उन्हे लगा कि यदि 'जहर वाले इंजेक्शन ने पौधे को नुकसान नहीं पँहुचाया तो वह उन्हे भी नुकसान नहीं पहुँचा सकता। हो सकता है कि शीशी में जहर के बजाय कुछ और हो।' यह सोचकर बसु ने जहर की शीशी उठाई और अपने मुँह से लगा लिया। उन्हे ऐसा करते देख सभी चिल्लाने लगे और वहाँ भगदड़ मच गई। लेकिन बसु को वह जहर पीने पर भी कुछ नहीं हुआ। यह देखकर एक व्यक्ति वहाँ आया और उन्हे शांत करता हुआ बोला कि उसी ने जहर वाली शीशी बदल कर उसी रंग के पानी की शीशी रख दी थी ताकि यह प्रयोग सही सिद्ध न हो पाए। इसके बाद बसु ने विष वाली शीशी से पौधे को पुनः इंजेक्शन दिया। देखते ही देखते कुछ क्षणों में पौधा मुरझा गया। इस तरह यह प्रयोग सफल रहा।

*श्रोत–**रेनू सैनी**, नवभारत टाइम्स*

मन

कविता

मन करता है सूरज बनकर,
आसमान में दौड़ लगाऊँ।
मन करता है चाँद बनकर,
सारी धरती पर चाँदनी फैलाऊँ।
मन करता है बादल बनकर,
गड़–गड़, गड़–गड़ शोर मचाऊँ।
मन करता है मम्मी बनकर,
बच्चों को लोरी सुनाऊँ।
मन करता है तोता बनकर,
मीठे फल बागों के खाऊँ।

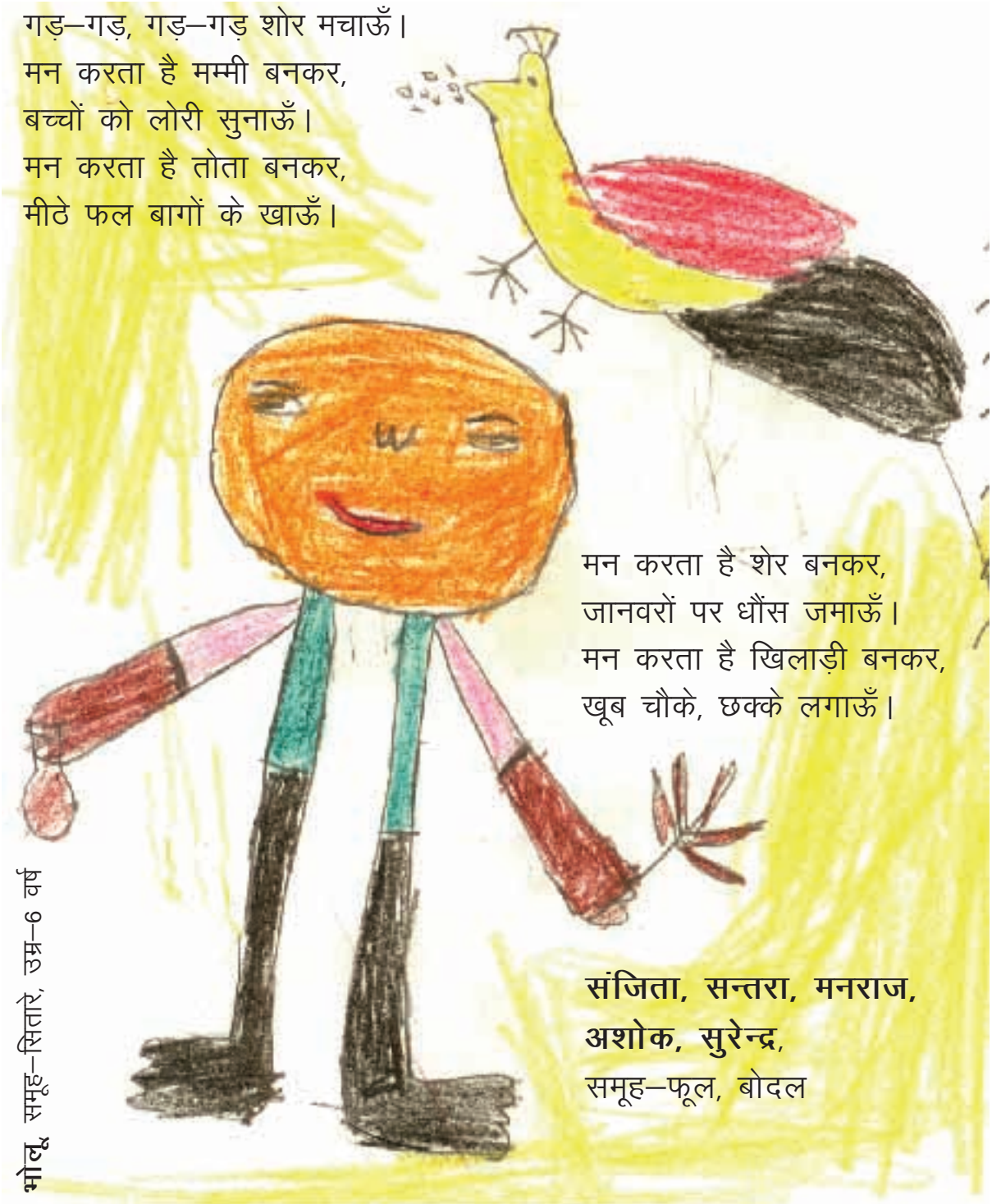

मन करता है शेर बनकर,
जानवरों पर धौंस जमाऊँ।
मन करता है खिलाड़ी बनकर,
खूब चौके, छक्के लगाऊँ।

संजिता, सन्तरा, मनराज,
अशोक, सुरेन्द्र,
समूह–फूल, बोदल

भोलू, समूह–सितारे, उम्र–6 वर्ष

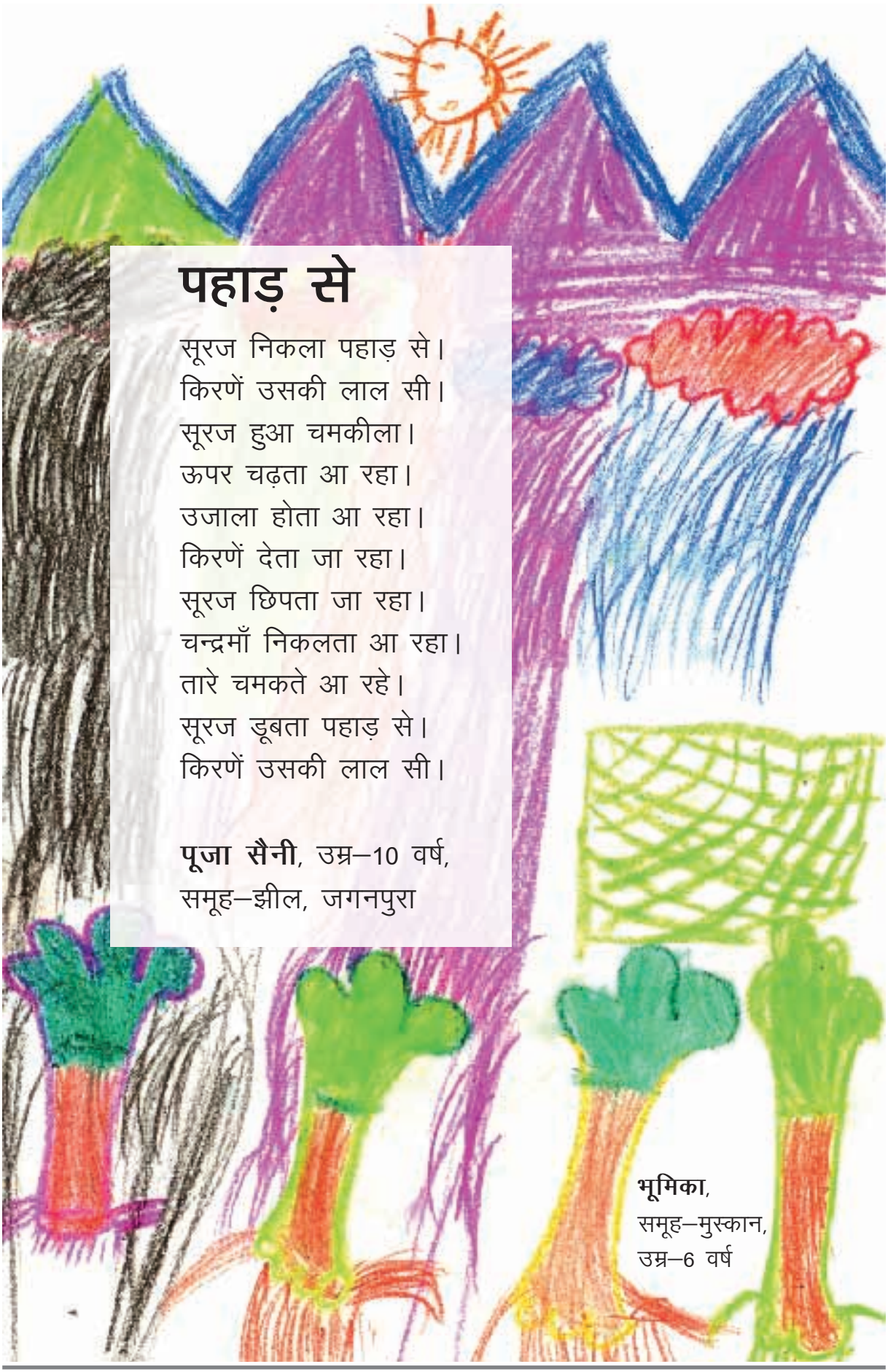

पहाड़ से

सूरज निकला पहाड़ से।
किरणें उसकी लाल सी।
सूरज हुआ चमकीला।
ऊपर चढ़ता आ रहा।
उजाला होता आ रहा।
किरणें देता जा रहा।
सूरज छिपता जा रहा।
चन्द्रमाँ निकलता आ रहा।
तारे चमकते आ रहे।
सूरज डूबता पहाड़ से।
किरणें उसकी लाल सी।

पूजा सैनी, उम्र–10 वर्ष,
समूह–झील, जगनपुरा

भूमिका,
समूह–मुस्कान,
उम्र–6 वर्ष

तितली

तितली फर–फर करती है,
जंगल में वो रहती है।
प्यार से फूलों पर आकर,
नाच सुन्दर करती है।
फसल जब खेतों में आती,
बहुत खुश हो जाती है।
प्यार से उनको खाती है।

नीतू शर्मा, समूह–फूल,
उम्र–10 वर्ष, बोदल

गोल्मा, समूह–आकाश, उम्र–5 वर्ष

तितली रानी

फूलों पर मंडराती।
बच्चों को बहलाती।
सावन में उछलती।
आसमां में उड़ती जाती।
मेरी प्यारी तितली रानी।
रंग बिरंगी मन को भाती।
पनघट पर वह जाती आती।
देख हमें वह दूर भागती।
मेरी प्यारी तितली रानी।

शिक्षक–**जीवनेन्द्र सिंह**, जगनपुरा

कहानी

माँ का घर

जितेन्द्र, फरिया, उम्र–9 वर्ष

जंगल के अंदर एक पेड़ था। उस पर एक बंदर का बच्चा रहता था। उस पेड़ के नीचे एक लोमड़ी रोज आराम करने आती थी। धीरे–धीरे दोनों में दोस्ती होने लगी। एक दिन बंदर ने लोमड़ी से कहा, ''तुम यहाँ क्यों आती हो?'' लोमड़ी ने कहा, ''मैं यहाँ आराम करने आती हूँ।'' बंदर ने कहा, ''मैं अपनी माँ को मिलने जाना चाहता हूँ। तुम मेरे घर का ध्यान रखना और यहीं रहना। जब तक मैं वापस नहीं आऊँ।'' लोमड़ी ने कहा ठीक है और लोमड़ी वहीं रहने लगी। बंदर चला जाता है। पर कुछ देर बाद वह वापस आ जाता है और कहने लगता है, ''मैं तो अपनी माँ का घर भूल गया हूँ। अब तुम भी मेरे साथ चलो।'' अब दोनों साथ–साथ चले जाते हैं। आगे जाकर वे एक पेड़ के नीचे बैठकर साँस खाने लगते हैं। तभी एक चिड़िया वहाँ आकर कहने लगती है, ''बंदर भाई–बंदर भाई, तुम्हारी माँ ने तुम्हे बुलाया है।'' बंदर ने कहा, ''ठीक है, तुम चलो हम आ रहे हैं।'' चिड़िया चली जाती है और वे दोनों भी उठ कर चल देते हैं।

रास्ते में एक चूहा मिलता है और उनसे पूछता है, ''बंदर भाई और लोमड़ी बहन, तुम कहाँ जा रहे हो?'' बंदर ने कहा, ''हम अपनी माँ के घर जा रहे हैं।'' चूहा बोला, ''मेरे कोई माता–पिता नहीं हैं। इसलिए तुम मुझे अपने साथ ले लो।'' उन्होंने चूहे को भी अपने साथ ले लिया और आगे चल दिये। चलते–चलते वे अपनी माँ के घर पहुँच जाते हैं। माँ ने कहा, ''बेटे ये कौन हैं?'' बंदर ने कहा, ''ये तो मेरे दोस्त हैं।'' बंदर की माँ ने उनको अपने पास रख लिया और वे सब एक साथ उसी घर में रहने लगे।

आरती, उम्र– 10 वर्ष, समूह– खुशबू, जगनपुरा

जान बचाओ

कविता गुर्जर,
समूह–सितारे,
उम्र–10 वर्ष

एक बार की बात है। चार चोर थे। वह चारों ही सोने–चाँदी, हीरे–जवाहरात और दूसरी सब चीजों की चोरी कर चुके थे। एक दिन उनमें से एक चोर ने कहा, ''हमने सबकी चोरी कर ली, लेकिन आज हम एक बकरे की चोरी करेंगे।'' वे चारों एक गाँव में गये। उस गाँव का नाम था कौशलपुरा। उस गाँव में एक बूढ़ी औरत ने बकरियों को एक बाड़े में बंद कर रखा था। चारों चोर रात में आकर उस बाड़े में घुस गये। अब चोर एक बड़ा सा बकरा ढूंढने लगे। उस समय बाड़े में एक शेर भी बैठा था। तभी बुढ़िया बोली, ''अरे बेटा जल्दी आ जा फिर रात बैठने वाली है।'' बुढ़िया की बात सुनकर चोर सोचने लगे कि आज तो रात बैठने वाली है। इसी जल्दी में उनमें से एक ने शेर का कान पकड़कर कहा, ''मुझे तो बड़ा बकरा मिल गया।'' उन्होने शेर को बाहर निकाला और उस पर बैठकर चल दिये। रास्ते में पीछे–पीछे वाले चोर को पेशाब लगी तो उसने कहा, ''तुम चलो, मैं पेशाब करके आता हूँ।'' यह कहकर जब वह उतरने लगा तो उसके हाथ शेर की पूँछ आ गई। वह समझ गया कि यह तो शेर है। बकरे के तो ऐसी पूँछ होती ही नहीं। इसलिये वह उतरने के बाद वापस नहीं आया। अब तीसरे चोर ने कहा, ''वह तो वापस आया नहीं चलो मैं भी पेशाब कर आता हूँ।'' उसे भी उतरते समय शेर की पूँछ पकड़ में आ गई। तो वह भी समझ गया। आगे जाते–जाते तीसरा चोर भी उतर गया। अब शेर का वजन कम हो गया था। इसलिए शेर तेज–तेज दौड़ने लगा। अब चौथा चोर भी समझ गया कि यह शेर है। ''लेकिन जान कैसे बचे। शेर जल्द ही मुझे नीचे गिराकर खा जायेगा।'' यह सोचकर वह शेर के कानों को कस कर पकड़ के शेर के चिपट जाता है। जैसे ही शेर एक बड़ के पेड़ के नीचे से गुजरा तो चोथे चोर ने शेर के कान छोड़कर बड़ की डाल को पकड़ लिया। शेर चला गया और वह बड़ के पेड़ पर चढ़कर अपनी जान बचा लेता है।

दिलखुश नायक, समूह–फूल, कटार फरिया

पसंद की रोटी

एक बहुत बड़ा राजा था। उसको चूल्हे पर सिकी गेहूँ की रोटियाँ बहुत पसंद थी। उसकी सेना में एक सैनिक था जो रोटियाँ बहुत अच्छी बनाता था। राजा को उसकी रोटियाँ बहुत पसंद थी। राजा उसी से अपनी रोटियाँ बनवाता था। एक दिन वह सैनिक मर गया। राजा को और किसी के हाथ से बनी रोटियाँ पसन्द नहीं आई तो राजा ने रोटी खाना बंद कर दिया। राजा ने बस्ती में ऐलान करवा दिया कि

शिवानी, समूह–रंगोली, उम्र–9 वर्ष

राजा को जिसके हाथ से बनी रोटी पसंद आयेगी राजा उसी को अपना खास सैनिक बनायेगा। उस बस्ती में एक लड़की और उसकी बूढ़ी माँ रहती थी। वह बहुत अच्छी रोटी बनाती थी। लोग रोज अपने–अपने घरों से रोटियाँ बनाकर ले जाते और राजा को खिलाते। पर राजा को किसी की रोटी पसंद नहीं आती। लोग सुबह से ही रोटी लेकर लाईन में खड़े हो जाते और अपनी बारी का इन्तजार करते। ऐसा कई दिन तक चलता रहा।

एक दिन लड़की और उसकी माँ ने सोचा हम भी राजा को अपनी रोटी बनाकर खिलाते हैं। अगर हमारी रोटी राजा को पसन्द आ जायेगी तो हमारी सारी समस्याएँ हल हो जायेंगी। दोनों माँ बेटी ने बढ़िया आटा लगाया और उसे खूब गूंथा। थोड़ा सा उसमें घी भी डाल दिया ताकी रोटी स्वादिष्ट बने। उस लगे हुए आटे को लेकर वे महल में चली गई। वहाँ रोटी खिलाने वालों की लाईन लगी थी। वे भी लाईन

लक्ष्मी, समूह–मुस्कान, उम्र–5 वर्ष

में लगकर अपनी बारी का इन्तजार करने लगी। जब लोगों ने कच्चा चून देखा तो हंसने लगे। कहने लगे, ''देखो ये माँ–बेटी राजा को कच्चा चून खिलाकर खुश करने आई हैं। वे चुपचाप लाईन में खिसकती रहीं। लोग बारी–बारी से अपनी रोटी खिलाकर लौट रहे थे। सभी के चेहरे उदास थे। कहते जाते, ''पता नहीं राजा को कोई रोटी पसंद भी आयेगी या नहीं। जैसे ही माँ–बेटी का नंबर नजदीक आया। बेटी ने लाईन से निकल कर आग जलाई और एक कड़ीली पर रोटी बेलकर डाल दी और लाईन में आकर खड़ी हो गई। अब माँ ने रोटी को बड़े ध्यान से सेका ताकि वह कहीं से जले फटे नहीं। जब रोटी सिककर तैयार हुई तो एक दम कचोरी जैसी गोल–गोल फूली हुई बिना दाग धब्बे वाली थी। बेटी ने उसे गाँव के शुद्ध देसी घी में चुपड़ा। इधर उनका नंबर भी आ गया तो दोनों ने तुरंत गरमा–गरम रोटी राजा को दी। जब राजा ने देसी घी की खुशबू वाली ताजा गोल रोटी को देखा तो वह बड़ा खुश हुआ। राजा ने तुरंत एक गास रोटी का तोड़कर अपने मुँह में डाला तो राजा को मजा आ गया। राजा ने माँ–बेटी दोनों को अपने महल में नौकरी पर रख लिया। राजा के खुश होते ही सब खुश हो गये।

सोनू मीना, उम्र–12 वर्ष, समूह–झिलमिल, जगनपुरा

शेरनी के चार बच्चे

गोकुल, समूह–चाँद, उम्र–10 वर्ष

एक शेरनी थी। वह बहुत बीमार थी। वह इतनी बीमार थी कि चल नहीं पा रही थी। धीरे–धीरे पूरा एक महीना हो चुका था पर शेरनी की तबीयत ठीक होने के जगह खराब होते जा रही थी। तब शेरनी डॉक्टर के पास गई। डॉक्टर ने इलाज में देखा उसके पेट में चार बच्चे हैं जो होने वाले हैं। डॉक्टर ने चारों बच्चों को पेट से बाहर निकाल दिया। शेरनी बहुत खुश हुई। अब वह चार बच्चों की माँ बन चुकी थी। बच्चे आपस में खेलते रहते हैं। एक साल बाद शेरनी उनको दहाड़ना, शिकार करना सिखाती है। बार–बार सिखाने पर भी चारों बच्चे शिकार करना नहीं सीख पाते हैं। दो साल बाद शेरों का झुंड जंगल में आता है। शेरों का झुंड शेरनी को घेर लेता है। शेरनी उसमें फंस जाती है और निकल नहीं पाती। शेरनी को फंसा देखकर बच्चे झुंड में घुस जाते हैं और झुंड पर हमला कर देते हैं। लड़ते–लड़ते वे अपनी मम्मी को झुंड से दूर खींचकर ले जाते हैं। तब उनकी मम्मी उनसे बहुत खुश होती है। उनकी मम्मी उनके नाम रखती है पहले का नाम राजू, दूसरे का नाम काजू, तीसरे का नाम शिनचेन, चौथे का नाम वासू।

लिजा, उम्र–9 वर्ष, समूह–रंगोली, सवाई माधोपुर

गोपाल किसान

जीवेन्द्र, शिक्षक

एक आदमी था। उस आदमी का नाम गोपाल था। उस आदमी के चार बेटी थी। बेटियाँ बड़ी होती जा रही थी। वह उनकी शादी करना चाहता था। पर आदमी के पास उनका तन ढकने तक को पैसे नहीं होते थे। इसलिए बेटियाँ घर से बाहर जाकर कोई काम भी नहीं कर सकती थी। किसान बहुत गरीब था। इसलिए वह जंगल में जाकर लकड़ी काटता था। लकड़ियों को बाजार में बेचने पर जो पैसा मिलता उससे वह खाने–पीने का सामान ही खरीद पाता था। एक दिन किसान ने बहुत सारी लकड़ियाँ काटी। उन लकड़ियों को काटने में बहुत थक गया था। पर वह रूका नहीं और लकड़ियों के दो बड़े बंडल बनाकर बाजार में बेच आया। एक बंडल से तो उसने रोज का खाने पीने का सामान खरीदा और दूसरे बंड़ल से बेटियों के लिये कपड़े और कुल्हाड़ी ले आया। जब वह घर गया तो अपनी बेंटियों से कहने लगा, ''लो आज मैं तुम्हारे लिये नये कपड़े लेकर आया हूँ।'' कपड़े पहनकर बेटियाँ बहुत खुश हुई और कहने लगी, ''पिताजी, हम भी तुम्हारे साथ जंगल में चलेंगे।'' किसान ने कहा, ''ठीक है, मैं तुम्हारे लिये कुल्हाड़ी भी लाया हूँ ताकि तुम कुछ काम भी कर सको।''

अगले दिन जब सुबह हुई तो किसान और उसकी चारों बेटियाँ जंगल में चले गये और लकड़ी काटने लगे। सभी ने मिलकर बहुत सारी लकड़ियाँ काटी। उन्होंने लकड़ियों के पाँच बंडल बनाये और बाजार में ले जाकर बेच दिये। आज किसान को अपनी बेटियों के कारण पाँच गुना अधिक कमाई हुई। सभी बड़े खुश हुए। इसी तरह वे रोज लकड़ियाँ काटते और बाजार में बेचते। धीरे–धीरे उनकी गरीबी दूर हो गई। फिर एक दिन किसान ने अपनी मेहनती बेटियों के लिये मेहनती लड़के देखकर चारों बेटियों की शादी कर दी।

आरती पुत्री रणजी, उम्र–10 वर्ष, समूह–खुशबू, जगनपुरा

याद की धूप–छाँव में

हर दिन चटनी

सन 2001 में मैं बोध शिक्षा समिति में कार्यरत था। संस्था द्वारा दूर दराज के पिछड़े गाँवों को शिक्षा से जोड़ने के लिये शिक्षक पहल कार्यक्रम चलाया जा रहा था। जिसके तहत मुझे रूंध बीणक गाँव को शिक्षा से जोड़ने के लिये वैकल्पिक विद्यालय चलाने की जिम्मदारी सौंपी गई। रूंध बीणक अलवर जिले की उमरैण पंचायत समिति में एक गाँव है । शहर से मात्र 20 किमी की दूरी पर स्थित यह गाँव सीलीसेड़ झील के उस इलाके में है जहाँ के बरसाती पानी से सीलीसेड़ झील ही नहीं जिले के सबसे बड़े बांध जयसमंद में भी पानी जाता है। सरिस्का अभ्यारण के जंगल में स्थित इस गाँव में 15 के लगभग परिवार हैं। गुर्जर जाति के इन लोगों

बीना, समूह–तारा, उम्र–10 वर्ष

का जीवन इस जंगल के पत्तों पर निर्भर रहता है। घर के सभी सदस्य पशु–पालन करके अपना जीवन गुजारने का प्रयास करते हैं। यहाँ एक भी सरकारी स्कूल नहीं है। सबसे पास की सड़क 5 किमी दूर है। बिजली के अभाव में पूरा गाँव अंधेरे में गुजर कर रहा है। झील और बांधों को पानी देने वाले इस पथरीले गाँव के लोगों का जीवन बड़ा कठिन है। बरसाती दिनों में पत्थरों के बीच बाजरे के दाने फैंक दिये जाते हैं।, जंगली जानवरों से बचाने के बाद जो बाजरा हाथ लगता है उसे ये वर्ष भर खाते हैं। जब कभी शहर जाना हुआ तो साबुत लाल मिर्च खरीद लाते हैं। जिसे नमक पानी के साथ पीसकर रोटी पर लगाकर खाते हैं। यदि घर में कोई मे. हमान आ जाए तो उस चटनी को तेल की कुछ बूंदों से छोंक दिया जाता है। बच्चे तो इस छुकी चटनी के लिए झगड़ा करते हैं। यह चटनी इन लोगों के लिए पकवान

से कम नहीं होती है। इतना सादा सरल जीवन जीने के लिए भी पूरे परिवार को जी तोड़ मेहनत करनी पड़ती है। चारे पानी के अभाव में पूरा दिन अपने पशु धन को जीवित रखने की कोशिश में चला जाता है। गाय भैंस एक दिन में एक–दो किलो से अधिक दूध नहीं देती हैं और देंगी भी कैसे, आखिर खाती क्या हैं? यही थोड़ा सा दूध इनकी चटनी रोटी है। पुरूष पशुओं के लिए दूर दूर तक पत्तों की तलाश करते हैं। परन्तु सर्दी के बाद तो कहीं दूर दूर तक कुछ नहीं होता। औरतें सुबह अंधेरे में ही कुल्हाड़ी और रस्सी लेकर दूर जंगल में चली जाती हैं। वहाँ छीले के पेड़ की मोटी डालियाँ (डाले) काटकर नीचे गिराती हैं फिर कुल्हाड़ी से कट लगाकर उस तने या डाले की छाल उतारी जाती है। उस छाल को रस्सी से

कालूलाल, समूह–फूल, उम्र–12 वर्ष

बांधकर जंगली जानवरों और फोरेस्ट वालों से बचते हुए दोपहर तक घर आती हैं। घर आकर उसी कुल्हाड़ी से छाल के छोटे–छोटे टुकड़े किये जाते हैं और फिर इन टुकड़ों को बड़े से ओखले में डालकर कूटा जाता है। जब ये टुकड़े नरम हो जाते हैं तो फिर शाम तक जाकर पशुओं को खाने को दिया जाता है।

दिनभर के भूखे पशु इसे ऐसे खाते है। जैसे वे रोटियाँ खा रहे हों। तब जाकर ये पशु शाम को एक से दो किलो दूध दे पाते हैं। इस थोड़े से दूध से चटनी रोटी की लड़ाई लड़ रहे ये लोग इतना दयनीय जीवन जी रहे हैं कि इनके कच्चे घरों में चूल्हें के सिवाय कोई सामान तक नहीं मिलता। फटे चीथड़ों को तन पर लटकाए हुए इन लोगों के घरों मे ना दरवाजा है और ना ही ताला। इनको ना चोरी का डर सताता है और ना ही किसी सांप बिच्छू की चिन्ता। मर जाना तो जैसे छुटकारा है इस नरक से। ऐसा कठिन जीवन जीने वाले इन लोगों को सरकार ने अभी तक कोई मदद नहीं की, अपितु उनको वहाँ से भी जंगल बचाने के नाम पर खदेड़ना चाहती है।

विष्णु गोपाल

अपना-अपना भाग

अशोक, कटार, उम्र–11 वर्ष

एक बार की बात है एक राजा था। उस राजा के दो लड़की थी। दोनों लड़की महल में रहती और खेलती। कुछ एक सालों में वे बड़ी हो गई। एक दिन राजा ने दोनों बेटियों को अपने कक्ष में बुलाया और पूछा, ''बेटी तुम किस के भाग का खाती हो?'' बड़ी बेटी ने कहा, ''पिता जी मैं तो आपके भाग का खाती हूँ।'' छोटी बेटी ने कहा, ''पिता जी मैं तो अपने भाग का खाती हूँ।'' छोटी बेटी के जवाब से राजा नाराज हो गया और उसने पंडित को बुलवाकर कहा, ''बड़ी बेटी के लिए अच्छा हष्ट–पुष्ट और महलों में रहने वाले राजकुमार से रिश्ता तय करके आओ। छोटी बेटी के लिए भूखा मरने वाला राजकुमार देखो, जिसके परिवार में कोई भी ना हो।'' पंडित जी चले गये और बड़ी बेटी के लिए जैसा राजा ने कहा वैसा रिश्ता तय कर दिया। छोटी बेटी के लिए पुराने से महल के बाहर बैठे दो राजकुमारों से रिश्ता तय कर दिया। जो हालत से भिखारी लगते थे। जिनका नगर में कोई नहीं था और वे डर के मारे महल में भी नहीं जाते थे। पंडित जी दोनों को तय समय पर बारात लेकर आने की कहकर आ गए। थोड़े दिनों में विवाह की तारीख आ गई। बड़ी बेटी की बारात हाथी घोड़ों पर आ रही थी तो छोटी बेटी की बारात में कोई नहीं था। वो दोनों भाई पैदल ही आ रहे थे। दोनों दूल्हों को भोजन करवाकर राजकुमारियों के साथ फेरे कर दिये। जाते समय बड़ी बेटी को राजा ने बहुत सारा धन दिया और छोटी बेटी को एक फुटी कोड़ी भी नहीं दी। रानी ने चुपके से एक मुठ्ठी सोने की मोहर छोटी बेटी को दे दी। राजा ने उसे देते हुए देख लिया था। राजा ने सारी मोहर वापस ले ली। पर एक मोहर उछलकर छोटी राजकुमारी के साथ चली गई।

छोटी बेटी ने उस एक मोहर को बेचकर घर की साफ–सफाई की और जरूरी

सामान खरीदा। वह रोज खाना देकर दोनों राजकुमारों को काम करने के लिए भेजती। वे जो कुछ लाते उससे उनका गुजारा चल रहा था। एक दिन दोनों भाई काम पर बातें करने लगे। छोटा भाई बोला, ''हम सड़ा–गला खाकर मस्त रहते थे। जब से भाभी आई है, हमें बहुत काम करना पड़ता है।'' दोनों भाईयों ने राजकुमारी से पीछा छुड़ाने के लिये एक बड़े से साँप को मटके बंद करके आँगन में रख दिया और काम पर चले गए। राजकुमारी ने मटकी खोली तो उसमें साँप निकला। साँप उसकी ओर फन खड़ा करके खड़ा हो गया। तब वह बोली, ''नागराज मुझे काटना है तो काट लो। मैं तो वैसे भी दुःखी हूँ।'' साँप ने काटने की बजाय उसका पल्लू पकड़ा और उसे एक जमीन के अंदर के होल में ले गया। राजकुमारी ने देखा तो वहाँ पुराने पूर्वजों का खजाना था। उस खजाने में खाने–पीने का सामान, सिक्के और सोने चाँदी के जेवरात थे। साँप खजाना बताकर चला गया।

शाम को दोनों भाई डरते–डरते महल में आते हुए सोच रहे थे कि अब तक तो राजकुमारी मर चुकी होगी। जैसे ही वे अन्दर पहुँचे तो अन्दर से आवाज आई ''आ गए।'' डर के मारे दोनों भाई भागने लगे। पीछे से राजकुमारी ने आवाज देकर उनको रोका तो वे रुक गए। उसने कहा, ''मैं मरी नहीं हूँ, मुझे मरना होता तो मैं कब की मर चुकी होती, चलो मेरे साथ।'' वह उनको पकड़कर खजाने में ले गई। दोनों भाई खजाने को देखकर चकित रह गये। उन्होंने खजाना बाहर निकाला और उस धन से नौकर लगाए, महल की सजावट करवाई और हाथी घोड़े खरीदे। बड़ा लड़का राजा बन गया। नगर वालों को अपनी प्रजा बना लिया और जगह–जगह बाग–बगीचे लगवाए। सभी आराम से रहने लगे।

एक दिन महल पर एक आदमी और एक औरत भीख मांगने आये। वे राजकुमारी के माता–पिता थे। पर उनको किसी ने भी नहीं पहचाना। राजकुमारी भी अपने माता–पिता को भूल चुकी थी। बस उसे अपनी माँ की कटी हुई अंगुली याद थी। राजकुमारी उनको भिक्षा देने लगी तो उसे अपनी माँ की कटी हुई अंगुली दिखाई दी। उसने उन्हें गौर से देखा और पहचान लिया। पहचानते ही दोनों एक दूसरे के गले लिपट गई। राजकुमारी दोनों को अन्दर ले गई और खाना खिलाया व हाल–चाल पूछे। वे रात भर बातें करते रहे। उसकी माँ ने बताया, ''बेटी, जब से तू गई है तब से बुरे दिन चल रहे हैं। जब माँ ने बेटी से पूछा तो बेटी ने कहा, ''मैं तो अपने भाग के भरोसे ही यहाँ तक पहुँची हूँ।'' सुबह होते ही रथ में बैठकर वे अपने नगर को चले गये। राजकुमारी भी उनके साथ पहली बार अपने पीहर को गई।

ब्रजेश गुर्जर, उम्र– 14 वर्ष, कटार फरिया

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ

बूझो यार पहेलियाँ

(1) तीन पाँव की तितली, नहा धोकर निकली।
(2) सोने का महल जिसमें काले–काले सिपाही।
(3) काले–काले रंग की हूँ, काले वन में रहती हूँ,
लाल पानी पीती हूँ, सफेद चिरकती हूँ।

शिल्पी, उम्र–7 वर्ष, समूह–रंगोली, आवासन मण्डल

(4) हरी–हरी मोत्या जड़ी चाँद की बहन सूरज की साली।
(5) हरी झंडी लाल मकान जिसमें बैठे काले जवान।
(6) मुँह नहीं फिर भी बोलता, पैर नहीं फिर भी चलता है,
हाथ नहीं फिर भी लिखता है।

गोलू, सागर, लोकेश, पिन्टु, मनजीत, समूह–सावन, जगनपुरा

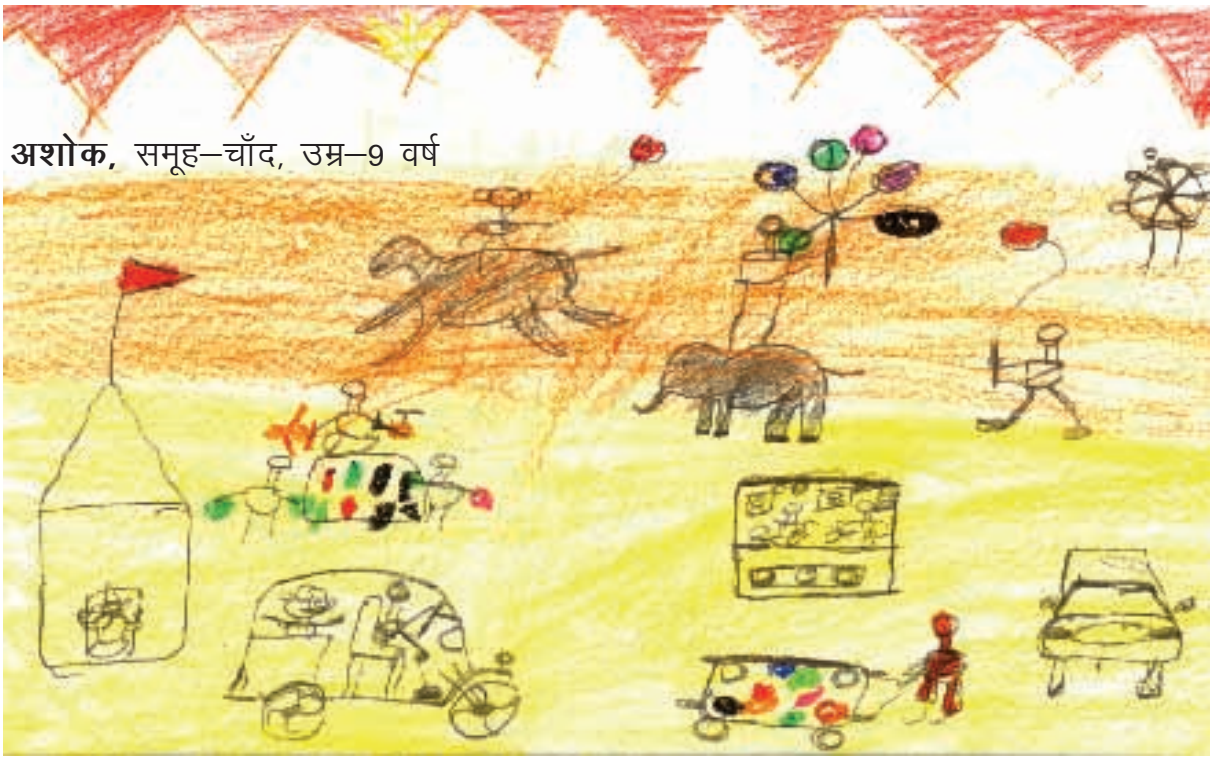

अशोक, समूह–चाँद, उम्र–9 वर्ष

भारती, शिक्षिका

हीहीही-ठीठीठी

(1) एक छोटा बच्चा दूसरे बच्चे से कहता है, ''अगर सूर्य दिन में न निकले तो क्या होगा?
दूसरा बच्चा, ''बिजली का बिल बढ़ जायेगा।''

(2) टीचर छात्रा से, ''आज तुमने देर से आने के लिए क्या बहाना ढूंढा है।''
छात्रा, ''सर आज मैं इतनी तेज दौड़कर आई कि बहाना सोचने का मौका ही नहीं मिला।''

(3) नया सिपाही थानेदार से, ''सर, ये बिलकुल गलत है कि मैं उस चोर से डर गया था।''
थानेदार, ''तो तुम उस गाड़ी के पीछे क्यों छिपे थे?''
नया सिपाही, ''जी, वह तो कुत्ता देख कर छिपा था।''

मोहित सैनी, उम्र–11वर्ष, समूह–सावन, जगनपुरा

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

कविता, बोदल, उम्र–10 वर्ष

एक जंगल में उड़ने वाला राक्षस रहता था। उसे जब भी भूख लगती तो वह जोर से होखता (दहाड़ता) जंगल के सभी जानवर उसका होखा सुनकर वहाँ से भाग जाते। परन्तु राक्षस उड़ता हुआ उन्हे तलाश कर लेता और खा जाता। ...

***सुमन सैनी**, उम्र–10 वर्ष, समूह–खुशबू, जगनपुरा द्वारा*
शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।

फागण में आये काले बदरिया।
घिर–घिर, फिर–फिर गाज गिराये।।

***विष्णु गोपाल** द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

पहेलियों के ज़वाब –

1. समोसा 2. पपीता 3. जूं 4. ओंस 5. तरबूज 6. पत्र

खुशबू, उम्र–6 वर्ष, समूह–सितारे